RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in/
ISSN: Under Process
Vol.: 1, Issue: 1, January-June 2023, pp. 35-41

बच्चों और किशोरों में साइबरबुलिंग: एक समीक्षात्मक अध्ययन

संगम सिंह[1] एवं डॉ. जितेन्द्र कुमार[2]

[1] शोध- छा्त्रा एवं [2] असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
सी.एम.पी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
ई-मेल: sangamsingh812@gmail.com

सारांश

इंटरनेट ने मनुष्य के जीवन के सभी पहलू को छूआ है, दुनिया भर मे लोगो को एक दूसरे से जोड़ने मे सरलता हुई है। एक बटन के क्लिक पर समाज की एक बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक जानकारी भी उपलब्ध करायी है। आज के समय मे विभिन्न सोशल मीडिया का उपयोग करके लोग सुविधाजनक संचार का अनुभव कर सकते हैं और विशाल जानकारी का आनंद उठा सकते हैं हालांकि, सोशल मीडिया के कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं जैसे कि साइबरबुलिंग, जिसका लोगों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, विशेषकर बच्चों और किशोरों पर। कोई भी आक्रामक कार्य या व्यवहार जो किसी व्यक्ति या लोगों के समूह द्वारा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग करके बार-बार किया जाता है और पीड़ित के खिलाफ दूसरों को नुकसान पहुँचाने या बुरा महसूस करने के इरादे से किया जाता है, जो अपने आप का बचाव करने मे असमर्थ है। बुलिंग, प्रत्येक स्थान पर होती है, चाहे वह कक्षा हो, खेल का मैदान हो, घर हो या समुदाय। इस पेपर का उद्देश्य साइबरबुलिंग, इसके कारणों, परिणामों और उपायों आदि के आधार पर भारत और विदेशों के अध्ययनो की समीक्षा करना है। यह लेख इन अध्ययनों का उनके उद्देश्यों के संबंध मे विश्लेषण करता है। यह लेख इस बात पर केन्द्रित है कि वर्तमान युग मे साइबरबुलिंग के क्षेत्र मे किस प्रकार के शोध किए जा रहे हैं और इन शोध के निष्कर्ष क्या कहते हैं। यह समीक्षात्मक अध्ययन हमें साइबरबुलिंग और उसके कारणों के परिणामों को समझने मे सहायता कर सकता है तथा साथ ही साथ इनके उन्मूलन की ओर भी ध्यान आकर्षित कर सकता है।

मुख्य शब्द: साइबरबुलिंग, कारण, परिणाम, इंटरनेट।

प्रस्तावना

बचपन और किशोरावस्था न केवल विकास की अवधि है अपितु उभरते हुए जोखिम उठाने की भी अवधि है। इन अवधियों के दौरान युवा लोग विशेष रूप से कमजोर होते हैं तथा व्यवहार और

परिणामों के मध्य संबंध को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं। डिजिटल तकनीक पारस्परिक संचार का एक नया रूप प्रदान करती है। हालांकि, साइबरबुलिंग अभी भी अनुसंधान का अपेक्षाकृत एक नया क्षेत्र है, किशोरों के बीच साइबरबुलिंग को एक गंभीर समस्या माना जाता है जो किशोरों के व्यवहार, मानसिक स्वास्थ्य और विकास से संबन्धित है। दुनिया भर मे इंटरनेट उपयोग की बढ़ती दर और युवाओं के बीच सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता ने इस स्थिति को और भयानक कर दिया है, अधिकांश बच्चे और किशोर अपने जीवन मे साइबरबुलिंग या ऑनलाइन उत्पीड़न का अनुभव करते हैं। साइबरबुलिंग व्यक्तिगत गोपनीयता और मनोवैज्ञानिक विकारों सहित युवाओं के जीवन के कई पहलुओं पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। साइबरबुलिंग का प्रभाव पारंपरिक बुलिंग से भी बुरा हो सकता है क्योंकि अपराधी की पहचान नही की जा सकती है और बुली करने वाले किसी भी समय बच्चों और किशोरों के साथ सरलता से जुड़ सकते हैं। जिन लोगों को ऑनलाइन धमकाया जाता है उनमे अवसाद, चिंता और अकेलापन अधिक होता है।

चूंकि, साइबरबुलिंग की सीमाएं भौगौलिक रूप से सीमित नहीं है, साइबरबुलिंग किसी एक देश मे निहित समस्या नहीं हो सकती है। साइबरबुलिंग एक वैश्विक समस्या है और इससे बचने के लिए अधिक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। दुनिया भर मे एक तिहाई इंटरनेट उपयोगकर्ता 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे और किशोर हैं। सुरक्षा की कमी, शैक्षिक प्राप्ति की कमी, खराब मानसिक स्वास्थ्य और अधिक अप्रसन्नता सहित साइबरबुलिंग के कारण होने वाले प्रतिकूल प्रभावों ने यूनिसेफ को यह बताने के लिए प्रेरित किया कि "डिजिटल दुनिया मे कोई भी बच्चा बिल्कुल सुरक्षित नहीं है।" (यूनिसेफ, 2017)

बुलिंग की अवधारणा

बुलिंग आक्रामक व्यवहार का एक रूप है जिसमे कोई जानबूझकर और बार-बार दूसरे व्यक्ति को चोट या परेशानी का कारण बनता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि यह किसी ऐसे व्यक्ति के खिलाफ बार-बार आक्रामक कृत्यों को संदर्भित करता है, जो सरलता से अपना बचाव नहीं कर सकते हैं। बुलिंग एक व्यक्तिगत गतिविधि हो सकती है या इसमे लोगों का एक समूह भी शामिल हो सकता है। बुलिंग के विभिन्न प्रकार इस प्रकार है-

मौखिक बदमाशी

इस प्रकार की बुलिंग मे मौखिक रूप से व्यवहार किया जाता हैं। जैसे- नाम पुकारना और उपनाम, गाली-गलौज, धमकी देना आदि।

शारीरिक बदमाशी

इस प्रकार की बुलिंग के व्यवहार मे शारीरिक चोट शामिल होते हैं। जैसे- धक्का देना, लड़ाई करना, मारना आदि।

सामाजिक बदमाशी

इस प्रकार की बुलिंग मे धमकाने वाला पीड़ित को सामाजिक रूप से अलग और हीन महसूस कराता है।

साइबरबुलिंग

कोई भी आक्रामक व्यवहार जो किसी व्यक्ति या लोगों के समूह द्वारा बार-बार इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग करके किसी को परेशान करने के इरादे से किया जाता है। साइबरबुलिंग किसी व्यक्ति को परेशान करने, डराने या शर्मिंदा करने के लिए इंटरनेट, ई-मेल, सेल-फोन, सोशल मीडिया या तस्वीरों जैसी तकनीक का उपयोग है। सामान्यतः यह युवाओं के साथ होता है।

साइबर बुलिंग से संबधित अध्ययन

क्षीरसागर, एट. अल. (2007) ने स्कूल में बदमाशी (बुलिंग) की व्यापकता का अनुमान लगाने के लिए एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप मे ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी और निजी स्कूलों से कक्षा 3 और कक्षा 7 में पढ़ने वाले 500 बच्चों को यादृच्छिक रूप से चुना गया। इस अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि भारतीय स्कूलों में बुलिंग (बदमाशी) बहुत प्रचलित है। यह ध्यान दिया गया कि 31.4 प्रतिशत बच्चों को उनके दोस्तों और सहकर्मी समूहों द्वारा धमकाया गया था। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में प्रसार अधिक पाया गया। रिपोर्ट किए गए बदमाशी के अनुभवों का सबसे आमरूप चिढ़ाना और नाम रखना था।

स्मिथ पी. (2008) ने बुलिंग के एक प्रकार, साइबरबुलिंग का अध्ययन किया और इस अध्ययन में स्वीडिश स्कूलों में साइबर बुलिंग की प्रकृति और सीमा की जांच के लिए 360 किशोरों (12-20 वर्षों) का सर्वेक्षण किया गया। इस अध्ययन में साइबर बुलिंग की चार श्रेणियों (टेक्स्ट मेसेज, ईमेल, फोन कॉल, और चित्र/ वीडियो क्लिप द्वारा) की बदमाशी के बारे में वयस्कों के जागरूक होने की धारणा के संबंध में जांच की गयी। इस अध्ययन में ज्ञात हुआ कि साइबर बुलिंग के प्रभाव चित्र/ वीडियो क्लिप के लिए अधिक नकारात्मक माना गया।

ली. (2008) ने साइबर बुलिंग से संबन्धित किशोरों के अनुभव की जांच की। यह अध्ययन एक क्रास-सांस्कृतिक परिपेक्ष्य से साइबर बुलिंग के मुद्दों की जांच करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य कनाड़ा और चीनी किशोरों के अनुभवों की जांच करना और साइबर धमकी से संबन्धित संभावित संस्कृति मतभेदों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस अध्ययन में कनाडा के एक बड़े पश्चिमी शहर के दो माध्यमिक विद्यालयों के 12 से 15 उम्र के 157 छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया और चीनी आकड़ों में दक्षिणी चीन के एक बड़े शहर के दो माध्यमिक विद्यालयों के 7 वी कक्षा के 11 से 14 उम्र के 202 छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया। इस अध्ययन के परिणामो से ज्ञात हुआ कि कनाडा और चीनी छात्रों के आंकड़े पारंपरिक बदमाशी से संबन्धित उनके व्यवहार मे समान स्वरूप प्रदर्शित करते है परंतु साइबरबुलिंग से संबन्धित उनके व्यवहार में कुछ अलग स्वरूप प्रदर्शित करते है।

मिश्रा, एट. अल. (2009) ने साइबर बुलिंग के बारे में बच्चों और युवाओं की धारणा की जांच की। इस अध्ययन का उद्देश्य साइबर बुलिंग में शामिल होने वाली तीन श्रेणियों के बीच अंतर करके युवाओं में साइबर बदमाशी की आवृत्ति की जांच करना था- पीड़ितों, धमकियों और धमकाने के शिकार। इनकी तुलना चैथी श्रेणी के छात्रों से करना जो शामिल नहीं है। इस अध्ययन मे न्यादर्श के रूप में मीडिल और हाईस्कूल के 2186 छात्रों को शामिल किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि छात्र साइबर बुलिंग में अत्यधिक शामिल है और पारंपरिक बुलिंग में पुरुषो की तुलना में महिलाओं को धमकाने की

शिकार होने की अधिक संभावनाएं थी।

हाफ एंड मिशेल (2009) ने साइबर बुलिंग के कारण, प्रभाव और उपचार से संबन्धित एक शोध पत्र लिखा। इस शोध पत्र का उद्देश्य साइबर बुलिंग की व्यापकता और कारणो, छात्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव और छात्रों और प्रशासकों से साइबर बुलिंग की प्रतिक्रियाओं की खोज के लिए शोध प्रस्तुत करना है। इस शोध में सर्वेक्षण का उपयोग करके 351 छात्रों से डेटा एकत्र किया गया। शोध पत्र के परिणामो से पता चलता है कि साइबर बुलिंग सामान्यतः रिश्ते की समस्याओं (ईर्ष्या, असहिष्णुता आदि) से उभरती है, पीड़ित शक्तिशाली रूप से नकारात्मक प्रभावों का अनुभव करते हैं (विशेषकर उनके सामाजिक कल्याण पर) और स्कूलों और छात्रों का प्रतिक्रियाशील व्यवहार सामान्यतौर पर अनुपयुक्त, अनुपस्थित या अप्रभावी होता है।

वेड एंड बेरान (2011) ने साइबर बुलिंग, बुलिंग का एक नया युग शोध का अध्ययन किया। इस अध्ययन में सेक्स और ग्रेड अंतर की जांच करते हुए साइबर बुलिंग की व्यापकता का पता लगाया गया। परिणामो से ज्ञात हुआ कि ग्रेड 6, 7, 10 और 11 मे छात्रों का एक बड़ा हिस्सा साइबर बुलिंग में शामिल थी। लड़कियों का लड़कों की तुलना में साइबर बुलिंग का लक्ष्य होने की अधिक संभावना थी।

श्रीशिवा, एट. अल. (2013) ने शहरी क्षेत्रो में स्कूली बच्चों में बुलिंग की व्यापकता के अनुमान को समझने के लिए अध्ययन किया। अध्ययन के लिए शहर के चार क्षेत्रो उत्तर, दक्षिण, पूर्व, और मध्य क्षेत्र से 300 उत्तरदाताओं का न्यादर्श चुना गया। अध्ययन के निष्कर्षो से ज्ञात होता है कि 56 प्रतिशत छात्रों को उनके साथियों या सहपाठियों द्वारा धमकाया गया और 37 प्रतिशत छात्रों को सहपाठियों के साथ-साथ वरिष्ठ छात्रों द्वारा भी धमकाया गया।

मल्ही, एट. अल. (2014) ने स्कूल बुलिंग की व्यापकता की जांच के लिए एक अध्ययन किया और इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय स्कूल जाने वाले किशोरों के बीच धमकाने वाले व्यवहार के व्यवहारिक, भावनात्मक, सामाजिक-आर्थिक स्तर पर जांच करना था। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उत्तर भारतीय शहर के सरकारी और निजी स्कूल के कक्षा 9 व 10 के 209 छात्र शामिल थे। अध्ययन के निष्कर्षो द्वारा यह प्रकाश डाला गया कि किशोरों में बदमाशी के व्यवहार की व्यापकता 53 प्रतिशत है। 19.2 प्रतिशत बदमाशी के शिकार थे, इसके बाद 27.9 प्रतिशत लड़कों को धमकाने के शिकार होने की संभावनाएं अधिक थी और 21.6 प्रतिशत लड़कियां बदमाशी की शिकार थी।

पटेल, एट. अल. (2017) ने गुजरात के शहरी स्कूलों के 7वीं, 8वीं और 9वीं कक्षा के छात्रों के बीच बुलिंग की रूपरेखा निर्धारित करने के लिए एक अध्ययन किया गया। यह वडोदरा के 2 अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों और आणंद के 3 स्कूलों पर किया गया क्रास-सेक्शनल सर्वे था। उपयोग किए गए विवरण प्राथमिक विद्यालय में सहकर्मी से बातचीत थी। अध्ययन के निष्कर्षो से पता चलता है कि 49 छात्र बुलिंग के व्यवहार में लिप्त थे। लड़कों के धमकाने की संभावना अधिक थी और साथ ही जिनके दोस्त कम थे, जिनका वजन अधिक था ऐसे छात्रों के शिकार होने की संभावना अधिक थी। इस अध्ययन में बुलिंग के व्यवहार और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच भी एक संबंध पाया गया।

बालकृष्णन एंड फर्नांडीज (2018) ने आत्मसम्मान और सहानुभूति पर साइबर बुलिंग के प्रभाव की

जांच की और पाया कि पीड़ितों के व्यवहार में साइबर बदमाशी की घटना की रिपोर्ट और आत्मविश्वास का महत्वपूर्ण संबंध है। जबकि वो जिनके पास उच्च स्तर की सहानुभूति है वो ऑनलाइन उत्पीड़न से कम प्रभावित होते है और वे लोगो को इस ऑनलाइन अपराध से बाहर आने में सहायता कर सकते हैं।

साइबरबुलिंग के कारण

बालकृष्णन एवं फर्नांडीज (2018) ने अध्ययन मे पाया कि कम आत्मसम्मान साइबरबुलिंग के अनुभव की रिपोर्ट करने की सबसे अधिक संभावना थी। सहानुभूति कम हो जाती है तो साइबरबुलिंग अपराध की संभावना बढ़ जाती हैं। पटेल, एट. अल. (2017) साइबरबुलिंग के कारणो की पहचान करते हैं कि लड़कों के धमकाने की संभावना अधिक थी और जिनके मित्र कम थे, जिनका वजन अधिक था ऐसे छात्रों के पीड़ित होने की संभावना अधिक थी। मिश्रा, एट. अल. (2015) साइबरबुलिंग के कारणों की पहचान करते हैं कि विस्तारित घंटो के लिए के लिए कंप्यूटर का उपयोग करना और दोस्तो या अन्य लोगो के साथ पासवर्ड साझा करना, और लिंग, उम्र और सुरक्षा जैसे साइबरबुलिंग के जोखिम कारकों का भी पता चला। श्री शिवा, एट. अल. (2013) ने अपने अध्ययन मे बताया कि छात्रों को उनके साथियों द्वारा धमकाया जाना बुलिंग का एक कारण है। हाफ एवं मिशेल (2009) साइबरबुलिंग के कारणो की पहचान करते है कि साइबरबुलिंग सामान्यतः ईष्र्या, असहिष्णुता आदि से उभरती है, पीड़ित नकारात्मक प्रभाव का अनुभव करते है।

साइबरबुलिंग के परिणाम

उच्च स्तर की सहानुभूति ऑनलाइन उत्पीड़न से बाहर आने में सहायक है (बालकृष्णन एवं फर्नांडीज, 2018)। कम मित्र, अधिक वजन वाले छात्रों के शिकार होने की अधिक संभावना होती है। बुलिंग के व्यवहार और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच भी संबंध होता है (पटेल, एट. अल. 2017)। साइबरबुलिंग न केवल बुली करने वाले या पीड़ित को प्रभावित करती है अपितु यह आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करती है। जिन छात्रों को धमकाया जाता है उनमे अन्य व्यवहार संबंधी समस्याएँ जैसे- घरेलू हिंसा, नशीली दवाओं के दुरुपयोग आदि की संभावना अधिक होती हैं। पीड़ित को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे- अकेलापन, अत्यधिक तनाव और कई भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याएँ (मल्ही, एट. अल. 2014)। छात्रों को उनके सहपाठियों के साथ-साथ वरिष्ठ छात्रों द्वारा भी धमकाया जाता है (श्री शिवा, एट. अल. 2013)। लड़कों की तुलना मे लड़कियों मे साइबरबुलिंग के लक्ष्य होने की अधिक संभावना होती है (वेड एंड बेरानी 2011)। साइबरबुलिंग सामान्यतः ईर्ष्या, असहिष्णुता आदि से उभरती है (हाफ एंड मिशेल 2009)। चित्र/वीडियो क्लिप साइबरबुलिंग के प्रभाव के लिए अधिक नकारात्मक माना गया (स्मिथ, पी. 2008)। भारतीय स्कूलों में बुलिंग बहुत प्रचलित है। बुलिंग के अनुभवों का सबसे सामान्यरूप चिढ़ाना और नाम रखना था (क्षीरसागर, एट. अल. 2007)।

साइबरबुलिंग की रोकथाम

बालकृष्णन एवं फर्नांडीज (2018) ने सुझाव दिया कि आत्मसम्मान और सहानुभूति उन्मुख हस्तक्षेप साइबरबुलिंग व्यवहार को सफलतापूर्वक संबोधित कर सकते हैं। ली. (2008) ने सुझाव दिया कि साइबरबुलिंग से बचाव के लिए पारंपरिक बुलिंग से बचाव के तरीकों को अपनाया जा सकता है तथा साथ ही साथ नए तकनीक विकास का लाभ उठाते हुए साइबरबुलिंग के लिए विशिष्ट हस्तक्षेप तैयार किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

डराने-धमकाने को रोकना कठिन है, यह कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया की तरह है क्योंकि प्रत्येक साल विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि, जाति, वर्ग, धर्म आदि से कई तरह के छात्र आते हैं और प्रत्येक छात्र अपने साथ कुछ पूर्वाग्रह लेके आते हैं जो डराने-धमकाने के कारणो के रूप मे काम आ सकते हैं। बच्चों और किशोरों मे साइबरबुलिंग को कम करके नहीं आँका जाना चाहिए क्योंकि यह बच्चों और किशोरों को विभिन्न तरीकों से नुकसान पहुंचा सकता है। सभी को इसके बारे मे जानकारी होनी चाहिए, इसे गंभीरता से लेना चाहिए और बच्चों को इसके गंभीर प्रभाव के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास करना आवश्यक है। जैसा कि हम देख रहें है कि साइबरबुलिंग अब पूरी दुनिया मे एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है। साइबरबुलिंग से संबन्धित अध्ययनो की समीक्षा से ज्ञात होता है कि साइबरबुलिंग के क्षेत्र मे अधिकांश शोधों की प्रकृति वर्णनात्मक है तथा बहुत कम शोधों की प्रकृति प्रायोगिक है। साइबरबुलिंग पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। साइबरबुलिंग से सामना करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, बहुआयामी और व्यवस्थित दृष्टिकोण को अत्यधिक प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संदर्भ

यूनिसेफ, (2017). चिल्ड्रेन इन ए डिजिटल वर्ल्ड. Retrieved from https://www.unicef.org/media/48601.

क्षीरसागर, वी० वाई०; अग्रवाल, आर०; एंड बावडेकर, एस० बी० (2007). बुलिंगइन स्कूल : प्रिवेलेंस एंड शॉर्ट-टर्म इम्पैक्ट. इंडियन पेडियाट्रिक्स, 44(1), पृष्ठ 25.

स्मिथ, पी० के०; महदवी, जे०;कार्वल्हो, एम०; फिशर, एस०; रशेल, एस०; एंड टिप्पेट, एन० (2008). साइबरबुलिंग: इट्स नेचर एंड इम्पैक्ट इन सेकेन्डरी स्कूल प्यूपिल्स. जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकेट्री,49(4), पृष्ठ 376-385.

ली, क्यू० (2008). ए क्रॉस-कल्चरल कंपैरिजन ऑफ एडोल्सेन्स एक्सपीरिएन्स रिलेटेड टू साइबरबुलिंग. एजुकेशनल रिसर्च, 50(3), पृष्ठ 223-234.

मिश्रा, एम०; सैनी, एम० एंड सोलोमन, एस० (2009). ऑनगोइंग एंड ऑनलाइन: चिल्ड्रेन एंड यूथ्स परसेप्शन ऑन साइबरबुलिंग. चिल्ड्रेन एंड यूथ सर्विसेज. पृष्ठ 2122-1228.

हाफ, डी० एल०; एंड मिशेल, एस० एन० (2009). साइबरबुलिंग : कॉज़, इफ़ेक्ट्स एंड रेमेडीज़. जर्नल ऑफ

एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, 47(5), पृष्ठ 652-665.

वेड, ए०; एंड बेरान, टी० (2011). साइबरबुलिंग : द न्यू इरा ऑफ बुलिंग. केनेडियन जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी, 26(1), पृष्ठ 44-61.

मल्ही, पी०; भारती, बी०; एंड सिंधु, एम० (2014). अग्रेसन इन स्कूल : साइकोसोशल आउटकम ऑफ बुलिंग एमंग इंडियन एडोल्सेन्स. द इंडियन जर्नल ऑफ पेडियाट्रिक्स,81, पृष्ठ 1171-1176.

पैटन, डी० यू०; हाँग, जे० एस०; पटेल, एस०; एंड क्रॉल, एम० जे० (2017). ए सिस्टमैटिक रिव्यू ऑफ रिसर्च स्ट्रेटजी यूज्ड इन क्वालिटीज़ स्टडीज़ ऑन एसकेएल बुलिंग एंड विक्टमाइजेशन. ट्रामा वाइलेंस, एंड एब्युज,18(1), पृष्ठ 3-16.

बालाकृष्णन, वी०; एंड फर्नांडीज़, टी० (2018). सेल्फ-स्टीम, इंपैथी एंड देअर इम्पैक्ट ऑन साइबरबुलिंग एमंग यंग एडल्ट्स. टेलीमैटिक्स एंड इनफोरमैटिक्स, 35(7), पृष्ठ 2028-2037.